डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों की अनुगूँज : डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता

डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे (महाराष्ट्र, भारत)

• सारांश (Abstract) :

विश्वभूषण डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के मानवतावादी विचार बहुआयामी हैं। उन्होंने हिंदू धर्म की चातुर्वर्ण्यगत विषमता मिटाकर स्वतंत्रता, समता, न्याय और बंधुता के आधार पर आधुनिक भारत का नवनिर्माण किया। डॉ. आंबेडकर जी 'भारतीय संविधान के शिल्पकार' हैं। विविधतारूपी विषमता से युक्त भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधकर एकता एवं धर्मनिरपेक्षता को बनाए रखने का महत्कार्य भारतीय संविधान ने किया है। डॉ. आंबेडकर जी को जातिविहीन, विज्ञाननिष्ठ, ज्ञान और विवेक आधारित मानव समाज का निर्माण अपेक्षित है। अर्थशास्त्री, न्यायविद, राजनेता, समाजसुधारक, स्त्रियों और श्रमिकों के अधिकारों के रक्षक के रूप में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी का योगदान मौलिक है। डॉ. आंबेडकर जी के कार्य को केवल और केवल अस्पृश्यता–निवारण के साथ जोड़ना और उन्हें केवल दलितोद्धारक कहना उनके समग्रतादर्शी विचारों के साथ अन्याय होगा। विपरीत परिस्थितियों से जूझकर, शिक्षित होकर, संघर्ष करते हुए गुलामी मिटाना उन्हें अपेक्षित है। लिंग, वंश, वर्ण, जाति जैसे किसी भी आधार पर भेदभाव करते हुए एक बड़े मानव समूह को मानव अधिकारों से वंचित रखे जाने का उन्होंने प्रखरता से विरोध किया है और स्वयंप्रकाशित बनकर अपने अधिकार स्वयं प्राप्त करने की चेतना उन्होंने बहुजनों में जगाई है। इसके परिणामस्वरूप आज 21 वीं शताब्दी में बहुजनों को शिक्षा, आत्मसम्मान तथा संघर्ष के आधार पर गुलामी और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की ताकत प्राप्त हुई है। यही कारण है कि आज हिंदी के अनेक कवि अपनी कविताओं के माध्यम से डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचारों को समाज तक पहुँचा रहे हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम आज के ऐसे ही सशक्त कवि हैं। उनकी कविताओं में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत हुए हैं। जातिभेद उन्मूलन, मनुष्य की समानता, परिवर्तन की माँग, मानव अधिकार, स्वानुभूत यथार्थ की विद्रोही अभिव्यक्ति डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता की रचना–प्रक्रिया के कुछ सूत्र हैं, जिनका वैचारित धरातल 'आंबेडकरवाद' है।

• बीज शब्दावली (Key Words) :

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, डॉ. जयप्रकाश कर्दम, कविता

1. प्रस्तावना (Introduction) :

भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने भारतीय समाज के पीड़ित, दलित, शोषित तथा वंचित बहुजनों को संगठित करके उन्हें गुलामी का एहसास दिलाकर शोषण से मुक्ति दिलाने का कार्य किया है। मानव जाति के विकास के लिए उनके द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में सोचना युक्तियुक्त होगा। स्वतंत्रता, समता, न्याय एवं बंधुता की चतुःसूत्री का उल्लेख डॉ. आंबेडकर जी ने भारतीय संविधान की प्रास्ताविका (उद्देश्यिका) में किया है। इन्हीं चार सूत्रों के आधार पर शोषणमुक्त समाज का गठन डॉ. आंबेडकर जी का अभीष्ट रहा है। उनकी दृष्टि में मानवता सबसे बड़ा धर्म है। बौद्ध दर्शन के 'अत्त दीप भव' अर्थात 'स्वयंप्रकाशित बनें' तत्व को उन्होंने अत्यधिक महत्त्व दिया है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों से प्रभावित अनेक कवि आज 21 वीं शती में अपना सृजन–संसार प्रसृत किए हुए हैं। सूरजपाल चौहान, ओमप्रकाश वाल्मीकि, दयानंद बटोही, कँवल भारती, मोहनदास नैमिशराय, रमणिका गुप्ता, सुशीला टाकभौरे, जैसे कवि– कवयित्रियों की सूची में डॉ. जयप्रकाश कर्दम का नाम उल्लेख्य है, जिनकी कविता की आधारभूमि डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचार हैं।

प्रस्तुत शोधालेख में डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की कविता में अनुगूँजित डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों का अनुशीलन किया गया है।

2. साहित्य–सर्वेक्षण (Review of Literature) :

शोधालेख के विषय के बारे में साहित्य–सर्वेक्षण करने के उपरांत निम्नलिखित साहित्य प्राप्त हुआ है –

- (डॉ.) बनसोडे, सुनील. (श्री) सचिन कांबले. कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन. कानपुर : विनय प्रकाशन, 2014

प्रस्तुत ग्रंथ में जयप्रकाश कर्दम जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। जयप्रकाश कर्दम के काव्य में दलित–जीवन तथा उसकी समस्याओं का विश्लेषण यहाँ किया गया है। जयप्रकाश जी के 'गूँगा नहीं था मैं' तथा 'तिनका–तिनका आग' दोनों संग्रहों की कविताओं का दलित विमर्श की दृष्टि से अनुशीलन यहाँ किया गया है। हमारे अनुसंधान की दिशा इससे थोडी अलग है। हमने डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों की अनुगूँज के रूप में 'कविता कोश' से चयनित जयप्रकाश जी की कविताओं का अनुशीलन किया है। यहाँ ऐसी कविताओं का चयन हमने किया है, जिसमें प्रत्यक्ष रूप में डॉ. आंबेडकर जी के विचार प्रस्तुत हुए हैं।

3. उद्देश्य (Aims and Objectives) :

प्रस्तुत शोध–निबंध के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

- भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों का अनुशीलन करना तथा उनके विचारों की प्रासंगिकता का विवेचन करना।
- डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता की रचना–प्रक्रिया में डॉ. आंबेडकर जी के विचारों के स्थान को रेखांकित करना।
- डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के मानव–विकास–केंद्रित विचारों के परिप्रेक्ष्य में डॉ. जयप्रकाश कर्दम की चयनित कविताओं का विश्लेषण करना।

4. प्रस्तुत अध्ययन का महत्त्व (Importance of this particular study) :

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने सभी मानवों में समता स्थापित करनी चाही। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विवेकवाद, जातिविहीन समाजरचना, गुलामी का विरोध, मानव अधिकार, सामाजिक परिवर्तन, समसामायिकता बोध जैसे डॉ. आंबेडकर जी के विविध वैचारिक आयाम महत्त्वपूर्ण हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम अपने आपको आंबेडकरवादी विचारक मानते हैं। उनकी कविता डॉ. आंबेडकर जी के विचारों से अनुप्राणित है। आज 21 वीं शताब्दी में समाज, राजनीति, धर्म जैसे क्षेत्रों में दिखावटीपन, अन्याय, विषमता का चित्र दिखाई दे रहा हैं, उसे दूर करना समय की माँग है। आज भी दलितों पर कई अत्याचार हो रहे हैं। सवाल यह है गोहत्या के खिलाफ आवाज उठानेवाले यहाँ मौन क्यों हैं? दलित रचनाकारों ने ही इस अन्याय के खिलाफ़ आवाज उठाई है, जिसके प्रेरणास्रोत हैं- डॉ. आंबेडकरजी। आज इतनी सारी विषम स्थितियों में देश को एकसंघ रखने का काम भारतीय संविधान ने किया है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष रहे हैं। उनके विचार आज प्रासंगिक हैं। आज शोषणमुक्त समाज रचना जरूरी है। यही कारण है कि विविध साहित्यिक रचनाकारों पर उनके विचारों के प्रभाव का अनुशीलन समयोचित है।

5. अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) :

यहाँ अनुसंधान की ग्रंथालय पद्धति (Library Method) के साथ–साथ सोद्देश्य प्रतिदर्श (Purposive Sampling) पद्धति अपनाई गई है। यहाँ आरंभ में भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की विचारधारा को स्पष्ट किया गया है। तत्पश्चात हिंदी के विख्यात आधुनिक कवि डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता की रचना–प्रक्रिया को समझने की कोशिश की गई है। उसके बाद डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की चयनित कविताओं में

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों की अनुगूँज का आशय और अभिव्यक्तिपरक विश्लेषण किया गया है। अंततः निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

6. सीमाएँ (Limitations) :

प्रस्तुत शोध–प्रबंध की सीमाएँ इस प्रकार हैं –

- इंटरनेट पर प्रकाशित 'कविता कोश' से जयप्रकाश कर्दम जी की कविताओं का चयन यहाँ अध्ययनार्थ किया गया है।
- जयप्रकाश जी की कविताओं पर डॉ. आंबेडकर जी के विचारों के प्रभाव का अध्ययन यहाँ किया गया है, उनकी कविता के अन्य पक्षों का अध्ययन यहाँ प्रस्तुत नहीं है।

7. विचार–विमर्श (Discussion) :

डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की कविताओं में अनुगूँजित भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों के स्वरों से अवगत होने से पूर्व हमें डॉ. आंबेडकर जी के विचारप्रवाह से परिचित होना समुचित होगा।

7.1 डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी की विचारधारा :

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचार समस्त मानवों को ऊर्द्वगामी चेतना की ओर ले जाने वाले हैं। उनके विचारों को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा संवैधानिक दृष्टि से वर्गीकृत किया जा सकता है। उनके कुछ मौलिक विचार इस प्रकार हैं –

अस्पृश्यता मानव पर लगा हुआ एक कलंक है। शिक्षा प्राप्त करके अस्पृश्यता के कलंक को हटाना होगा। अस्पृश्यता एक प्रकार की गुलामी है। गुलामी और धर्म एक साथ नहीं रह सकते। धर्म मनुष्य के लिए है या मनुष्य धर्म के लिए? जो धर्म हमारी परवाह नहीं करता, उसे हम धर्म क्यों मानें? चातुर्वर्ण्य विषमताजन्य है, इसलिए उस व्यवस्था को हटाकर समता स्थापित करनी होगी। 'मनुस्मृति' शूद्रों की प्रगति में अवरोधक ग्रंथ है। अतः उसका दहन ही उचित है। पुराने धर्मग्रंथों को विज्ञान की कसौटी पर कसा जा सकता है। गुलाम को उसकी गुलामी का एहसास दिलाने से वह गुलामी त्याग देगा। जब तक उसे इस बात का एहसास ही नहीं है कि हम गुलाम हैं, तब तक वह गुलामी करता ही रहेग, और वह गुंलामी का विरोध नहीं कर पाएगा। डॉ. आंबेडकर जी ने महात्मा गाँधी जी द्वारा अस्पृश्यों को 'हरिजन' संबोधित किए जाने की कड़ी निंदा की है। दलितों को अपना रास्ता स्वयं बनाना होगा। उन्हें शिक्षित होना पड़ेगा, अपना रहने का गलत तरीका बदलना पड़ेगा, हीनता की भावना मन से निकालनी पड़ेगी।

भारतीय संविधान लचीला भी है और मजबूत भी। उसमें कालसुसंगत संशोधन किया जा सकता है। इस दृष्टि से वह लचीला है। संविधान के सम्मुख सभी भारतीय समान हैं। सभी को समान

अधिकार प्राप्त हैं। यह संविधान देश को युद्ध और शांति दोनों समय जोड़कर रख सकता है। लेकिन कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण संविधान की ख़राबी नहीं, बल्कि संविधान का कार्यान्वयन करनेवालों का वह दोष होगा।

डॉ. आंबेडकर जी ने बौद्ध धर्म का स्वीकार किया है। उन्होंने कई लोगों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलाई है। ईश्वर, अवतार वाद, देवी–देवताओं की पूजा का विरोध, श्राद्ध और पिंडदान का विरोध, मनुष्य कीसमानता में विश्वास, चोरी, झूठ, कामुक गलतियों का विरोध, शराबपान का विरोध, धर्मपरिवर्तन द्वारा फिर से जन्म लेने की बात, बुद्ध के शांति और अहिंसा के तत्वों का समर्थन आदि उनके धार्मिक विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। धम्म का पालन किसी अलौकिक सत्ता के विश्वास पर आधारित नहीं बल्कि यह व्यक्ति की अपनी संभावनाओं तथा सद्गुणों पर आधारित है। यही उनकी मान्यता रही है।'बुद्ध और उनका धम्म' ग्रंथ में डॉ. आंबेडकर जी लिखते हैं कि जीवन की पवित्रता बनाए रखना ही धम्म है। इसलिए धम्म का संबंध नैतिकता से है, किसी धर्म या मजहब से नहीं। जहाँ व्यक्ति–व्यक्ति का संबंध है, वहाँ नैतिकता का पालन आवश्यक है।ज्ञान और विवेक आधारित मानव समाज का निर्माण जरूरी है। परंतु ज्ञान शील के बिना अधूरा है। प्रज्ञा, शील, करूण और मैत्री भाव से संचालित समाज ही समरस हो सकता है। युवकों के लिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी का संदेश हैं – ''युवक खुद पर निर्भर रहें। वे खुद की मेहनत पर जिंदगी बिताएँ। खुद की बुद्धि पर विश्वास कर उनका इस्तेमाल करें, विवेकबुद्धि की शरण लें। ज्ञान से ज्यादा पूजनीय और कुछ भी नहीं। कुदरत ने किसी को भी दास के रूप में पैदा नहीं किया है। वे स्वयं ही अपने भाग्य के शिल्पी हैं।'' (कीर अनु. सुर्वे, 440)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर महिलाओं की उन्नति के पक्षधर थे। समाज में महिलाओं की स्थिति के आधार पर समाज का मूल्यांकन हो सकता है। महिलाओं को 'आधी आबादी' कहा गया है। संविधान के अनुच्छेद 14 में यह प्रावधान किया गया है कि किसी भी नागरिक के साथ लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। महिलाओं को घर–परिवार–समाज में बरोबरी का दर्जा, पैत्रिक संपत्ति में बराबरी का हिस्सा, फॅक्टरियों में काम करने वाली महिलाओं को संवैधानिक मातृत्व अवकाश (मैटर्निटी लिव), गर्भधारणा करने या न करने का पूरा अधिकार, महिला श्रमिकों को कार्यस्थल पर सुविधाओं की उपलब्धता जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर महिलाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता पर डॉ. आंबेडकर जी ने जोर दिया हैं। हिंदू कोड बिल (1951) मेंउनके द्वारा विवाह, उत्तराधिकार और अर्थव्यवस्था के कानूनों में स्त्री–पुरुष समानता की माँग की गई है। डॉ. आंबेडकर जी ने मुस्लिम महिलाओं के दुःख का स्रोत बहुविवाह पद्धति तथा मुस्लिम महिलाओं में प्रचलित पर्दा प्रथा की आलोचना की है। इस प्रकार डॉ. आंबेडकर जी के विचार बहुआयामी एवं मानवतावादी हैं।

डॉ. आंबेडकर जी के कुछ ग्रंथ इस प्रकार हैं –'Who Were The Shudras', 'Buddha and His Dhamma', 'Thoughts on Pakistan', 'Idea of A Nation', 'The Untouchables', आदि। इन ग्रंथों में साथ ही साथ समय–समय पर उनके द्वारा दिए गए भाषणों में उनके विचार अभिव्यक्त हुए हैं।

7.2 जयप्रकाश कर्दम : रचना–प्रक्रिया के कुछ आयाम :

जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले जयप्रकाश कर्दम दलित जाति में जन्मे हुए हैं। निरंतर परिश्रम, संघर्ष तथा विपरीत परिस्थितियों से जूझना, आत्मविश्वास तथा ईमानदारी इनकी कुछ चरित्रगत विशेषताएँ हैं, जो उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित हुई हैं। कर्दम जी गौतम बुद्ध, कबीर, महात्मा जोतीराव फुले तथा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों से प्रभावित हैं। साहित्य में मानवतावाद को वरीयता देने वाले जयप्रकाश जी का साहित्य अपने भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है। जयप्रकाश कर्दम जी के दो काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं – 'गूँगा नहीं था मैं' (1999), 'तिनका–तिनका आग' (2004)। साथ ही साथ उनकी कुछ कविताएँ इंटरनेट के 'कविता कोश' में भी संग्रहित हैं। उन्होंने 'छप्पर' और 'करूणा' जैसे उपन्यासों का भी सृजन किया है। वे विगत कई वर्षों से 'दलित साहित्य वार्षिकी' का संपादन कर रहे हैं। दलित जीवन के सामाजिक यथार्थ का चित्रण, स्वानुभूति, गुलामी एवं शोषण का विरोध, मानव अधिकार, परिवर्तन के स्वर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचारों की अनुगूँज, बौद्ध धर्म और उसके मानवतावाद का प्रभाव जैसे रचना–प्रक्रिया के कुछ आयाम उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं।

साहित्य–सृजन के बारे में डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी लिखते है :–''मेरा गाँव आंबेडकरवादी विचारों से परिचित और प्रभावित एक बहुल गाँव है। आजादी के बाद की पीढ़ी बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों से परिचित हुई तथा गाँव में बौद्ध धर्म और आंबेडकर जी का प्रचार–प्रसार हुआ। बचपन से ही मैं इन विचारों के संपर्क में आया। सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यकलापों में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए मस्तिष्क में दलित प्रश्न कुलबुलाने लगे। व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना मन में पैदा होने लगी और जब लिखना शुरू किया तो स्वाभाविक रूप से थे सब बातें, ये प्रश्न मेरी रचनाओं का विषय बनने लगे।'' इससे स्पष्ट है कि डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की रचना–प्रक्रिया डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचार–प्रदेय से संपृक्त है।

'नैशनल दस्तक' चैनेल को दिए हुए साक्षात्कार में डॉ. जयप्रकाश कर्दम कहते हैं– ''मैं डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों से बहुत ज्यादा प्रभावित हूँ। मुझे लगता है कि भारतीय समाज को एक बेहतर समाज और देश को राष्ट्र बनाना आंबेडकरवाद के आधार पर हो सकता है।'' (You Tube Clip – nationaldastak . com)

7.2.1 गुलामी, अन्याय तथा शोषण का विरोध :

डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में बहुजनों की गुलामी, अन्याय तथा शोषण का प्रखर विरोध

किया गया है। 'आंबेडकर की संतान' कविता में जयप्रकाश कर्दम जी ने हरिया, हरखू, कृष्णा मंगल जैसे दलितों की समस्याओं का जिक्र किया हे। हड्डियों के ढाँचे जैसा दिखने वाला हरिया जानता है कि वह रूग्ण नहीं है। उसे श्रम और संताप ने तोड़ा है। हरखू जानता है कि वह अक्षम अपंग नहीं है, बल्कि बर्बरता और बेबसी का शिकार है। कृष्णा ने अपने बदन का सौदा नहीं किया है, बल्कि उसे जालिम दरिंदों ने लूटा है। जेल में बंद मंगल को मालूम है कि वह चोर, डकैत या हत्यारा नहीं है। उसने जुल्म और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है। कवि कहते हैं कि हरिया, हरखू, कृष्णा और मंगल के साथ सदियों से अन्याय ही होता आ रहा है। परंतु इससे किसी की आत्मा को कोई कष्ट नहीं पहुँच रहा है। इन घटनाओं के खिलाफ किसी भी प्रकार की विद्रोहात्मक आवाज नहीं उठाई जाती। न्याय, समता और भ्रातृत्व का कोई प्रश्न नहीं उठाया जाता। परंतु अब डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के कारण दलितों में अपने मनुष्यत्व का एहसास जाग उठा है, गुलामी और अन्याय के प्रति विद्रोह करने की क्षमता उनमें आई है। यहाँ उल्लेखित पात्र दलितों के प्रतिनिधि हैं, जिन्हें कवि ने 'आंबेडकर की संतान' कहा है। कवि के शब्दों में –

''आंबेडकर की संतान अब और नहीं सहेगी – / जुल्म और अत्याचार / नहीं रहेगी मौन / कृष्णा के आँसू, हरखू की बेबसी / हरिया के संताप का लेगी हिसाब / तोड़कर अन्याय और शोषण की जंज़ीरों को / रचेगी नया इतिहास।''

7.2.2 जातिभेद की दीवारों का हमेशा के लिए उल्लंघन :

जातिविहीन समाज रचना डॉ. आंबेडकर जी का अभीष्ट था। डॉ. जयप्रकाश जी ने अपनी कविता में जातिभेद की दीवारों का हमेशा के लिए उल्लंघन करने की बात कही है।

'जाति के जंगलों में' कविता में कवि ने इन्सानियत पर ही प्रश्नचिह्न उठाया है। आज के जमाने में शांति और अहिंसा का गलत अर्थ लिया जा रहा है। कवि कहते हैं कि अहिंसा की गली में इस तरह शांति है कि अब किसीकी किसीसे बात नहीं होती है। जाति के जंगलों में इस कदर आग लगी है कि अब 'आदमी' नामक जाति का अर्थात इन्सानियत का अस्तित्व भी नहीं रहा है। सब लोग जाति में इतने बँट गए हैं कि उन्हें अपनी मनुष्य जाति का एहसास ही नहीं रहा है। कवि के शब्दों में

''जाति के जंगलों में आग ऐसी लगी है।
आदमी नाम की अब जाति होती नहीं है।''

'ऐसा क्यों होता है' कविता में कवि ने खून के लाल रंग के माध्यम से मानव एकता का संदेश दिया है। कवि कहते हैं कि खून कभी जलता है, कभी जलाता है, कभी खौलता है, कभी सूख जाता है। कभी–कभी कोई खून के अभाव में मर भी जाता है। जब खून शरीर के अंदर होता है,

तब सवर्ण–अवर्ण जैसे कितने रंगों में बँटा हुआ होता है, परंतु शरीर से बाहर आने पर सभी जाति–धर्म के लोगों का खून लाल ही होता है। कवि ने सवाल उठाया है कि ऐसा क्यों होता है?

7.2.3 मानवता की अनुगूँज :

डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविताओं में मानवता को वरीयता दी गई है। मानवता की अनुगूँज उनकी रचना–प्रक्रिया का प्रमुख स्वर है।

'आदमी और कविता' में भी इन्सानियत के खो जाने का दुःख प्रकट हुआ है। यहाँ कवि ने यह सवाल उठाया है कि आदमी और कविता एक साथ क्यों नहीं चलते? जहाँ कविता है वहाँ आदमी नहीं है और जहाँ आदमी है वहाँ कविता नहीं है। डॉ. आंबेडकर जी का यह विचार था कि वर्ण, जाति और संप्रदाय से ऊपर उठकर, इनसे परे जाकर समूची मानवजाति के विकास का लक्ष्य हाँसिल करना चाहिए। इसी विचार का प्रतिबिंब प्रस्तुत कविता में हैं – ''वादों, विवादों की इस दुनिया में / जहाँ एक आदमी कर सके संवाद / दूसरे आदमी से / समझें वे एक–दूसरे का दर्द – दूसरे की संवेदना बाँटे एक / वर्ण, जाति और संप्रदाय से ऊपर उठ / केवल आदमी बनकर / मनुष्यता के आवेग और संवेदना के संवेग से अलग और क्या है कविता?'' अर्थात कविता में मनुष्यता के आवेग सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

'आदमी' कविता में कवि बता रहे हैं कि सभी दलित प्रगति के सपने जरूर देखें, इंजीनियर, डॉक्टर, अफ़सर, वकील, वैज्ञानिक कुछ भी बनें / सपनों को साकार करने का अधिकार सबको है। कविता के अंत में कवि कहते हैं –

''जैसा तुम चाहो / तुम चाहे जो करो , चाहे जो बनो /
आदमी जरूर बनना / आदमी को आदमी समझना।''

कवि यह बता रहे हैं कि मनुष्य कितनी भी ऊँची ओहदें प्राप्त करें, उसे इन्सानियत नहीं भूलनी चाहिए। अंत तक उसे इन्सान बने रहना है।

7.2.4 दलितों की स्वानुभूत पीड़ा का एहसास :

जयप्रकाश कर्दम जी स्वयं दलित जाति में जन्मे हुए होने के कारण उन्होंने अपने काव्य में दलितों की स्वानुभूत पीड़ा का एहसास जतलाया है। ''जयप्रकाश कर्दम का जन्म एक दलित परिवार में होने के कारण दलित जीवन की समस्याओं को इन्होंने नजदीक से देखा है और अनुभव भी किया है। अपने इन्हीं अनुभवों को इन्होंने अपनी रचनाओं में रेखांकित किया है। दलितों की प्रगति के लिए अपने साहित्य के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जयप्रकाश कर्दम के मन में दलित समाज के प्रति आस्था है।'' (बनसोडे, 13)

'दलित वेश में' कविता दलितों के प्रति सहानुभूति दर्शाने वालों के पाखंड का पर्दाफाश करती है। कुछ सवर्ण लोग दलितों के प्रति सहानुभूति दिखाने का नाटक करते हैं। उनके मन में दलितों के

प्रति कोई लगाव नहीं होता। ऐसे लोगों को संबोधित करते हुए कवि कहते हैं कि यदि तुम्हें दलितों के प्रति सच्ची सहानुभूति है तो केवल कहने से काम नहीं चलेगा, अपितु उनके लिए कुछ कार्य करके दिखाना पड़ेगा। सवर्ण जाति के जो लोग दलितों का शोषण कर रहे हैं, उन पर अन्याय–अत्याचार कर रहे हैं, उनके खिलाफ़ तुम्हें लडना पडेगा। यदि तुम अपनी आवाज दलितों के साथ नहीं मिला सकते, तो यह झूठी सहानुभूति मत दर्शाओ। सहानुभूति और स्वानुभूति में अंतर है। तुमने दलितों जैसी पीडा खुद नहीं भोगी है। इसलिए तुम्हें स्वानुभूति नहीं है। इसलिए सहानुभूति के संवेदन से स्वानुभूति का ताप तुम मत झुठलाओ। हम तुम्हारे मगरमच्छ के आँसुओं को भली–भाँति पहचानते हैं। इसलिए बेहतर यही होगा कि तुम हमारे साथ अपनेपन का खेल मत खेलो, बल्कि वास्तविक रूप में हमारे साथ अपनत्व जतलाओ। यहाँ कवि ने दलितों के मानसिक शोषण का विरोध किया है।

'हरिजन' कविता में कवि ने यह विद्रोही सवाल उठाया है कि यदि हरि परमपिता है और सब मनुष्य उसकी संतानें हैं, तो सिर्फ दलित जाति में जन्मे हुए लोगों को ही हरिजन क्यों कहा जाता है? कवि कहते हैं कि मैंने ईश्वर को देखा तो नहीं है और न ही मैं उसे जानता हूँ। और न ही मैं उसे मानता हूँ। मैं अपने माता–पिता को जानता हूँ, जिन्होंने मुझे जन्म दिया। मैं अपनी माता की कोख से जन्मा हूँ। अपने माता–पिता की संतान हूँ। ईश्वर मेरा पिता नहीं है और मैं हरिजन नहीं हूँ। महात्मा गाँधी जी ने अस्पृश्य जाति में जन्मे हुए लोगों का 'हरिजन' कहा था। इसका विरोध करते हुए अपने अस्तित्व के प्रति सजगता को रेखांकित करके कवि ने यह कविता लिखी है। डॉ. आंबेडकर जी ने 'हरिजन' शब्द का विरोध किया है।

'सत्य' कविता में जयप्रकाश जी कह रहे हैं कि सवर्ण लोग अर्धसत्य बातें करते हैं, उनके अनुकूल जो सत्य है, वह बतलाने की कोशिश करते हैं। सत्य को सत्य की तरह कह पाना आसान नहीं है क्योंकि सत्य कडुआ होता है। दलितों के शोषण का यह सत्य है। जिसकी ओर आनाकानी की जा रही है। ऐसा करने वाले लोग सत्य के मौन हत्यारे हैं।

7.2.5 भारतीय संविधान एवं मानव अधिकार :

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में भारतीय संविधान और मानव अधिकार से संबंधित बातों की अभिव्यक्ति हुई है।'आओ नया भारत बनाए' कविता में कवि ने भारत की सामाजिक समस्याओं के प्रति आगाह करते हुए प्रखर व्यंग्य से, प्रहारात्मक ढंग से अपने क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए हैं। कवि प्रतिगामी लोगों पर व्यंग्य कर रहे हैं। जो लोग दलितों को मनुष्य नहीं मानते, हिंदुत्व के नाम पर शोषण का समर्थन करते हैं, ऐसे लोगों पर कवि ने व्यंग्य किया है। कवि व्यंग्य से कहते हैं कि आओ, ऐसा नया भारत बनाएँ जहाँ बेकारी, भूखमरी, लाचारी, अस्पृश्यता, भ्रष्टाचार का साम्राज्य हो, जहाँ ईमानदारी और नैतिकता त्याज्य हो, इन्सानियत की निर्मम हत्या की गई हो,

जहाँ सत्य और न्याय का अस्तित्व न हो, बुद्धिजीवी लोग सत्ता के गुलाम हो, राजनीति में अपराधी लोग हों, बलात्कारियों और घोटालाबाजों को मंत्री बनाया गया हो, सांप्रदायिकता, जातीयता, अराजकता, अनुशासनहीनता हो परंतु प्रगति और विकास की बातें न हों, जहाँ प्रेम करना वर्जित हो और सौहार्द्र का गला घोंटा जाए, आंतरजातीय विवाह करने वालों को फाँसी पर लटकाया जाए। कवि व्यंग्य से कहते हैं कि नया भारत बनाने के लिए हमें कुछ नए काम करने पडेंगे। जैसे – रोटी छीनकर देशभर में त्रिशूलें बाँटना, विज्ञान की पढ़ाई बंद करके तंत्र मंत्र विद्या के स्कूल खोलना, नमस्कार कहना बंद करके जय श्रीराम कहना, जो नहीं कहँगे उन्हें अपना दुश्मन मानना, दलितों को उत्पीड़ित करना, उनका शोषण करना, हिंदुत्व के सामने राष्ट्रीयत्व का गला घोंटना आदि। ये सारी बातें व्यंग्यपूर्वक कहीं जा रही हैं, हालाँकि कवि को यह अपेक्षित है कि ये सारी बातें अपने देश में नहीं होनी चाहिए। जिस मनुस्मृति को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने जलाया था उसी मनुस्मृति को अपनाकर हम नए भारत के लोग अपना संविधान ही जलाएँ। कवि के शब्दों में –

''हिंदुत्व हमारी संस्कृति और राष्ट्रीयता है **/** हिंदुत्व से आगे कोई बात नहीं करेंगे **/** हिंदुत्व के सिपहसालारों, आओ **/** संविधान को जलाकर **/** मनु का विधान अपनाएँ **/**नया भारत बनाएँ।''

यहाँ कवि इस बात की ओर संकेत कर रहे हैं कि मानव अधिकारों की रक्षा करने वाले मूल्य एक ओर हैं और चातुर्वर्ण्य व्यवस्था का समर्थन करने वाली मनुस्मृति एक ओर है। दोनों में जमीन–आसमान का अंतर है। आज भारतीय संविधान ने विविधता में एकता वाले भारतीय सूत्र से हम सबको एक धागे में पिरोया है। ऐसी स्थिति में भी हम प्रतिगामी मनुवादियों की तरह हिंदुत्व की माँग करेंगे, तो वह उचित नहीं होगा। कोई एक विशिष्ट धर्म महत्त्वपूर्ण नहीं होता, अपितु मानव धर्म सबसे श्रेष्ठ है । यह डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा कही गई बात प्रस्तुत कविता में परोक्ष रूप से सामने आई है। नया भारत बनाने के लिए मानवता को सर्वोच्च स्थान देना होगा। तथा किसी के मानव अधिकारों का हनन न करना होगा।

7.2.6 अभिव्यक्ति के क्रांतिकारी स्वर :

जयप्रकाश कर्दम जी की कविता में अभिव्यक्ति के क्रांतिकारी स्वर गूँज उठे है। उत्पीड़न तथा शोषणका विरोध करने वाले ये स्वर तीव्रतर हैं क्योंकि उनका संबंध भोगे हुए यथार्थ से है। इसका सौंदर्यशास्त्र अलग है।

'आग' कविता में कवि ने सामाजिक यथार्थ को आग के विविध माध्यमों से अभिव्यक्त किया है। कवि कहते हैं कि आज समाज में जिधर देखो उधर आग ही आग है। हवा–पानी, ज्ञान–अज्ञान, भूख–भक्ति, काम–क्रोध, हिंसा, प्रतिशोध, अलगाव, अहंकार, अभाव, लाचारी, खेत–खलिहान,

बस्तियाँ, श्मशन, सभी इस आग की चपेट में आए हैं। यह आग जलती और जलाती है। इस आग से कोई बचा नहीं है। यह आग आखिर में यज्ञकुंड में बदल जाती है और पशुओं की नहीं, मनुष्यों की बलि लेती है। कवि यह बताना चाहते हैं कि यह आग दलितों का विनाश कर रही है। कवि ने बेलछी, खैरलांजी और मिर्चपुर की दलित–अत्याचारों वाली घटनाओं की ओर संकेत करके फूलन और भंवरी के भी उदाहरण दिए हैं। कवि ने इस आग को 'मनुष्यता के माथे पर कलंक' कहा है। इसी आग के कारण आग समाज का एक हिस्सा अपाहिज बन गया है। कवि ने इसका मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है –

''इस आग से कोई बचा नहीं है / इस आग में कोई समूचा नहीं है / यह आग जब विस्तार पाती है / एक बड़े यज्ञकुंड में बदल जाती है / जो पशुओं की नहीं, मनुष्यों की बलि खाती है / बेलछी, खैरलांजी और मिर्चपुर / इस आग के सबसे बड़े निशान हैं / फूलन और भंवरी इस आग ही पहचानहैं / आग, जो मनुष्यता के माथे पर कलंक है/ जिसके कारण आज तक / समाज का एक हिस्सा अपंग है।''

7.9 निष्कर्ष(Conclusion) :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि –

7.9.1 भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के विचारों में समानता, विवेकवाद, विज्ञाननिष्ठता, यथार्थपरकता,मानवतावाद, गुलामी एवं शोषण का विरोध जैसी मनुष्य के विकास से संबंधित बातों का महत्त्वपूर्ण स्थानहै। 'शिक्षित बनिए, संगठित हो जाइए और संघर्ष कीजिए' जैसा व्यापक संदेश उन्होंने दिया है।

7.9.2 डॉ. बाबासाहब आंबेडकर भारतीय संविधान के शिल्पकार है। स्वतंत्रता, न्याय, समता, बंधुता जैसे तत्वों से युक्त समाज का निर्माण उन्हें अपेक्षित हैं। जयप्रकाश जी की कविता में विविधता में एकता सूत्र को स्थापित करने वाले और 'हम सब भारतीय हैं की बात जतलाने वाले भारतीय संविधान तथा मानव अधिकारों के प्रति आस्था प्रकट हुई है।

7.9.3 डॉ. जयप्रकाश कर्दम आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। उनकी कविता में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचार मुखरित हुए हैं।

7.9.4 बहुजनों की गुलामी, अन्याय तथा शोषण का विरोध करके उन्हें 'आंबेडकर की संतान' कहते हुए शोषणमुक्त समाज व्यवस्था का जिक्र जयप्रकाश जी ने किया हैं।

7.9.5 जातिवाद का प्रखर विरोध जयप्रकाश जी की कविता में है। उनके अनुसार जातिभेद से संकुचित मानसिकता उत्पन्न होकर पिछडी जातियों में जन्मे हुए लोगों के मन में हीनता ग्रंथि उत्पन्न होना उचित नहीं है। व्यक्ति जन्म से नहीं, अपितु अपने कार्य से श्रेष्ठ होता है। जातिभेद के आधार पर किसी विशिष्ट वर्ग को विकास से वंचित रखना अनुचित है।

7.9.6 स्वानुभूति और सहानुभूति में अंतर है। डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की कविता में बहुजनों की स्वानुभूत पीडा को प्रकट किया गया है। यह बहुजनों का भोगा हुआ यथार्थ है। बहुजनों को किसी की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है। जैसे कि उन्हें 'हरिजन' कहा जाकर उनके प्रति करूणा दिखलाना।

7.9.7 डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की कविता का केंद्र मानवता है। सभी मनुष्य समान हैं, मानव–मानव में जाति, धर्म, पंथ, वंश, वर्ण किसी भी आधार पर भेद करना गलत है। मनुष्य पढ–लिखकर कितने भी ऊँचे ओहदे पर पहुँचे, परंतु उसे हमेशा ध्यान में रखना होगा कि सबसे पहले हम एक मनुष्य हैं। अतः अन्य मनुष्यों के साथ मानवताभरा व्यवहार हमारा कर्तव्य है। हमें किसीके मानव अधिकारों का हनन नहीं करना है।

7.9.8 जातीयता, अशिक्षा, शोषण, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अंधविश्वास जैसी विविध सामाजिक समस्याओं का चित्रण डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी की कविता में प्राप्त होता है। इन समस्याओं का समाधान डॉ. आंबेडकर जी के विचारों द्वारा करने का उनका प्रयास सफल रहा है।

7.9.9 आलंकारिक शब्दजंजाल से परे स्वानुभूत तथ्यपरक भाषा, क्रांतिकारी शब्दों का प्रयोग, विद्रोही शैली, व्यंग्यात्मक शैली, यथार्थपरकता डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कविता की अभिव्यक्तिपरक विशेषताएँ हैं।

- **संदर्भ ग्रंथ :**

- (डॉ.) कीर, धनंजय. अनु. (डॉ.) गजानन सुर्वे. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जीवन–चरित. नई दिल्ली : पॉप्युलर प्रकाशन प्रा. लि., द्वितीय पुनर्मुद्रण 2011 / 1993
- (डॉ.) बनसोडे, सुनील, (श्री) सचिन कांबले. कवि जयप्रकाश कर्दम : एक अध्ययन. कानपुर : विनय प्रकाशन, 2014

- **वेब संदर्भ :**

- भीमराव अम्बेडकर – विकिपीडिया< https : /hi . wikipedia . org/>
- < www.nationaldastak.com > : You Tube Clip :posted on 09/09/2016
- < kavitakosh.org >